

आज ज़िम्मेदारी लेने की कोई बात ही नहीं कर रहा



तत्कालीन ब.कु. जलदेव की हस्ती ज

हम कोई ऐसी ज़िम्मेदारी लेने की बात नहीं कर रहे हैं जिसमें कुछ पैसा खर्च होता हो, कुछ समय लगाना पड़ता हो, शरीर से कुछ अधिक काम करने की ज़रूरत हो या हमारी पहले की ज़िम्मेदारियों में कोई ऐसी ज़िम्मेदारी जुड़ जाए कि हम इस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठाने में असमर्थ हों। ज़िम्मेदारी तो हरेक व्यक्ति लेता है और मनुष्य ने कई व्यर्थ ज़िम्मेदारियाँ भी ले रखी हैं। हम तो ऐसी ज़िम्मेदारी बता रहे हैं जिससे हमें झंझटों से छुटकारा मिल जाए, मन को तहत महसूस हो और शरीर में भी हल्कापन आ जाए।

पूरुखर्त क्या है? पूरुखर्त यह है कि हर कोई स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी ले-ले। दूसरे की ज़िम्मेदारी तेजा तो करती है लेकिन दूसरे की ज़िम्मेदारी तो ही ही जा रहती है क्योंकि इसका लाभ हमें ही होने वाला है। अगर हम अपनी ज़िम्मेदारी लेने में भी स्वयं को अटकाव अनुभव करते हैं तो तब हमें भी हमें मिल सकते हैं।

अगर और कुछ नहीं कर सकते तो हम ज़िम्मेदारी लेने का इशारा तो करें। हम कोई ऐसी ज़िम्मेदारी लेने की बात नहीं कर रहे हैं जिसमें कुछ पैसा खर्च होता हो, कुछ समय लगाना पड़ता हो, शरीर से कुछ अधिक काम करने की ज़रूरत हो या हमारी पहले की ज़िम्मेदारियों में कोई ऐसी ज़िम्मेदारी जुड़ जाए कि हम इस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठाने में असमर्थ हों। ज़िम्मेदारी तो हरेक व्यक्ति लेता है और मनुष्य ने कई व्यर्थ ज़िम्मेदारियाँ भी ले रखी हैं। हम तो ऐसी ज़िम्मेदारी बता रहे हैं जिससे हमें झंझटों से छुटकारा मिल जाए, मन को तहत महसूस हो और शरीर में भी हल्कापन आ जाए।

ज़िम्मेदारी केवल यह है कि हम स्वयं को विधायक समझें

वह ज़िम्मेदारी यह है कि हमें से हरेक स्वयं को विधायक समझें, अर्थात् हरेक व्यक्ति अपनी बुद्धि में इस विचार को दृढ़ रख

कर कर्म करें कि उसका कर्म ऐसा श्रेष्ठ हो कि वह नियम, मर्यादा या कानून के समान हो। तब हरेक व्यक्ति स्वयं को विधायक समझेगा और विधि-पूर्वक तथा नियम-पूर्वक कार्य करेगा।

हम कोई ऐसी विधायक बनने के लिए नहीं कह रहे हैं जिसके लिए चुनाव लड़ने की ज़रूरत हो और जो विधान सभा भंग होने पर छूट जाए। यह तो पोस्टरबाजी, नारेबाजी, भाषणबाजी आदि के चक्कर में पड़ने के बिना ही विधायक बनने की बात है। विधान सभा वाले कई विधायक तो स्वयं भी कानून तोड़ देते हैं परन्तु हम तो जीवन को ऐसा विधिपूर्वक बनाने की बात कह रहे हैं कि आपका हर कर्म लोगों के सामने पालनीय अथवा अनुकरणीय विधान या आदर्श हो। यहाँ तो इस ज़िम्मेदारी को लेने की बात हो रही है कि हम चार्जिक नियमों, आध्यात्मिक नियमों का सदा पालन करेंगे और हमारा जीवन ही विधान की खुली किताब होगा। जिसका जीवन और कार्य-व्यवहार विधि और विधान पूर्वक हो वही तो वास्तव में 'ज्ञानी' और 'योगी' है। 'ज्ञानी' कहते ही उसको है कि जो कर्मों और आचरण को दैवी गुणों से युक्त करना जानता हो और 'योगी' की परिभाषा ही यह है कि वह 'युक्ति-युक्त' रीति से हरेक कार्य करता हो।

विधाता का परिचय और उसकी स्मृति परन्तु इस प्रकार विधि और विधान के अनुरूप कार्य करने और स्वयं को विधायक समझने के लिए ज़रूरी है कि हम 'विधाता' को जानें और कर्म करते समय उसका बतावा हुआ विधान हमारी स्मृति में रहे। परमात्मा को 'विधाता' कहा ही इसलिए जाता है कि वह कर्मों का विधान बता कर और उसके अनुरूप जीवन बनाने की विधि समझा कर हमारे भाग्य का विधाता बनता है। तो परमात्मा को 'भाग्य-विधाता' तो कहते हैं परन्तु वे ये नहीं जानते कि परमात्मा विधि-विधान बता कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं और उससे ही हमारा भाग्य बनता है।

हमें ये मालूम होना चाहिए कि परमात्मा अथवा विधाता के जो गुण हैं, वे ही श्रेष्ठ विधान की नींव हैं। परमात्मा के गुणों का वर्णन करते हुए प्रायः कहा जाता है कि वह पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, सद्भावना, करुणा, सत्यता, दिव्यता और सद्गुणों का भंडार है। इन्हीं गुणों से वह नये समाज का निर्माण करता है। इन्हीं के द्वारा ही वह मनुष्य का भाग्य बनाता है। यही उसके विधान की बुनियाद है। यदि हम कर्म करते समय विधाता को सामने रखेंगे तो उसके ये गुण हमारी स्मृति में रहेंगे और इन द्वारा ही हम विधायक बन सकेंगे अर्थात् ऐसे कर्म कर सकेंगे जो विधि और विधान के अनुसार हों।



गुवागम-ओआरसी(हरियाणा)। भारत के सर्वोच्च न्यायाधीश न्यायाधीश ज.पी. लखी दीदी, ब.कु. निविता तथा अन्य बलाकुमार भई-बहने।



पंडो-हि.प्र.। हिमाचल प्रदेश के सांख्यिकीय सहायक ने जगदीश्वर कार्यक्रम में बलाकुमारों संस्थान की ओर से नया निवारण के इतिहास कार्य करने पर ब.कु. शिला बहन को शील औद्योगिक न मोंमें से भेंट कर सम्मानित करते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री लखन मुखर्जीवर सिंह मुखर्जी।



नाथनी-खोटा(ओडिशा)। रक्षाबंधन पर्व पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब.कु. नैलु बहन। साथ है अन्य भई-बहने।



प्रातःवाहपुर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय कार्यक्रम में विजित प्रसाद,साधुज्य एवं उद्योग मंत्री भारत सरकार को माउंट आबू जाने का निमन्त्रण देने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब.कु. शरिता तथा अन्य।



माउंट आबू-पौड़ण भवन(राज.)। पौड़ण भवन के खरबाम का अंतर्राष्ट्रीय करने के पश्चात् समूह चित्र में अखिल सदान कोर्ट के न्यायाधीश नीरज वर्मा व न्यायाधीश अशिता वर्मा, संस्था की लोगल एडवोकेट ब.कु. बड़ा एवं ब.कु. शरिता।



हावाम-उ.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर देशीक हिलनुस्तान ब्यूटीसीक और मयूरवी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. शरिता तथा अन्य।



मोवागम-विहार। दैवी प्रकाशपीक की 14वीं पुर्णवर्षीय पर अखिल भारतीय रक्षासूत्र कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब.कु. निविता, प्रमुख विकास परामर्शकारी एन.कुमार, नल्लंद मेडिकल कॉलेज अस्पताल के रक्तस्रोत विभाग के प्रभारी, चिकित्सा परामर्शकारी अर्जुन रंजन तथा अन्य रक्षकता भई-बहने।



करनाल-हरियाणा। विधायक जगमोहन आनंद को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब.कु. प्रेम दीदी।



जगाधरी-हरियाणा। हिट्टी कमिस्तर पार्थ गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब.कु. अंजू।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पश्चिम आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें जो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले थी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।